

Cityभास्कर

जयपुर, शनिवार, 15 अप्रैल, 2023

अवॉर्ड सेरेमनी | पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्मश्री साइंटिस्ट डॉ. आर.ए. माशेलकर का छात्रों से इंटरैक्शन

आप 18 साल के हों या 80 के, हर सुबह खुद से कहें- 'मेरा सर्वश्रेष्ठ आना अभी बाकी है'

सिटी रिपोर्टर | जयपुर

सबसेस मंत्र- आकांक्षाएं ही संभावनाएं, इनोवेशन जीवन जीने का एक तरीका

लोग 2020 को 'इयर ऑफ पैंडमिक' कहते हैं। मैं इसे 'इंडियन साइंस' कहता हूँ। देश में जब कोविड आया हमें उस वायरस के स्ट्रक्चर व सीक्वेंस की जानकारी तक नहीं थी। मगर हमारे वैज्ञानिकों ने 6 हफ्ते के अंदर समाधान खोज निकाला। मेरा मानना है कि साइंस में लगातार इन्वेस्टमेंट होते रहने चाहिए। चूंकि हम आयुर्वेद की बदौलत अन्य देशों की तुलना में काफी हद तक मजबूत थे, इसलिए पूरी ताकत के साथ उबर पाए। ये बातें साइंटिस्ट डॉ. आर. ए. माशेलकर ने शुक्रवार को जेकेएलयू में आयोजित समारोह में कही। इस मौके पर उन्हें 'जेकेएलयू लॉरिएट अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान यूनिवर्सिटी के प्रो चांसलर एच पी सिंघानिया, जेकेएलयू के वाइस चांसलर प्रो. धीरज सांघी, प्रो. वी सी आशीष गुप्ता और रजिस्ट्रार के.के. माहेश्वरी ने उन्हें यह सम्मान दिया।

1991 में पद्मश्री, वर्ष 2000 में पद्म भूषण और 2014 में पद्म विभूषण विजेता माशेलकर ने स्टूडेंट्स को संबोधित करते हुए कहा, 'आप चाहे 18 के हो या 80 साल के, खुद से हमेशा कहते रहिए- 'मेरा सर्वश्रेष्ठ आना अभी बाकी है'।' गौरतलब है कि जेके समूह के संस्थापक हरि शंकर सिंघानिया की स्मृति में राष्ट्रीय स्तर पर योगदान के लिए विभिन्न हस्तियों को इस सम्मान से नवाजा जाता रहा है। अब तक पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, पूर्व राष्ट्रपति डॉ. प्रणव मुखर्जी सहित कई हस्तियों को सम्मानित किया जा चुका है।

- आकांक्षाएं ही आपकी संभावनाएं हैं। आपका भाग्य आपके हाथ में है। बेस्ट प्रैक्टिस के बजाए नेक्स्ट प्रैक्टिस पर फोकस करें। परिणाम ज्यादा इनोवेटिव होंगे।
- सीखने की प्रक्रिया में फेल होना 'पहल प्रयास' है। उद्वेग, दृढ़ता व जुनून जीवन में आत्मसात करें। विजेता कभी हार नहीं मानते और हार मानने वाले कभी विजेता नहीं बन सकते।
- अपनी तरक्की के रास्ते खुद बनाएं।
- चाहें आप 18 के हो या 80 के। हर सुबह खुद से कहें मेरा बेहतर आना अभी बाकी है, हो सकता वो दिन आज का दिन हो। इनोवेशन जीवन जीने का एक तरीका है।



यादों के गलियारे से-

जब मैंने कलाम साहब को कहा- मैं मीटिंग में नहीं आ सकता, तो वे खुद मेरे पास आ गए

डॉ. आर.ए. माशेलकर ने डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम से जुड़ी पुरानी यादें साझा करते हुए कहा- 'मैं और कलाम साहब 'इंडिया इन ए नॉलेज सुपरपावर' विषय पर काम करने वाले थे। मेरी वाइफ, जो कभी किसी बात पर शिकायत नहीं करती थीं। मगर मेरी और कलाम साहब की मीटिंग वाले दिन फ्रोजन शोल्डर के कारण दर्द और अकड़न से रोने लगीं।' मैंने तुरंत अपनी सेक्रेटरी को बोला मेरी पुणे की टिकट करवा दो। असिस्टेंट ने बताया मेरी मीटिंग है। मैंने कहा- अभी मेरे लिए मीटिंग का हिस्सा बनना संभव नहीं है। मैंने डॉ. कलाम को फोन करके अपनी बात बताई। उस समय वह विज्ञान भवन में एक मीटिंग की अध्यक्षता कर रहे थे। कुछ देर बाद मेरी सेक्रेटरी ने बताया कलाम साहब यहां खुद आए हैं। वे अपने काम को लेकर काफी जुनूनी थे। हमेशा सवाल करते, बात करते रहते थे।

स्टूडेंट्स से अपील-

देश में ही रहकर गूगल व माइक्रोसॉफ्ट जैसे काम करें; विदेश का रुख न करें

डॉ. आर.ए. माशेलकर ने हल्दी और बासमती चावल पर अमरीकी पेटेंट को चुनौती देने का किस्सा साझा किया। उन्होंने बताया कि मुझे ये जानकारी अखबार से मिली तो हमने उस पेटेंट के खिलाफ लड़ाई लड़ी और जीते। मेरा मानना है, नॉलेज हमेशा यूनिवर्सिटी और आईआईटी में नहीं मिलती। बल्कि जीवन की प्रयोगशाला में काम करके जो सीखा, वह भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। बड़ी से बड़ी टेक्नोलॉजी सबसे निचले तबके तक पहुंचनी चाहिए। देश में रहकर गूगल, माइक्रोसॉफ्ट जैसे काम करें, विदेशों का रुख न करें। 81 वर्षीय माशेलकर का जन्म गोवा में हुआ। वे महाराष्ट्र में पले बढ़े। काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (सीएसआई) के डायरेक्टर जनरल रह चुके हैं। 2004-06 के दौरान इंडियन नेशनल साइंस अकेडमी के प्रेसीडेंट भी रहे हैं। ऑक्सफोर्ड सहित कई यूनिवर्सिटी में पढ़ा चुके हैं।